भूमिका

साहित्य समाज का अंकन है, समाज व्यक्तियों का समूह है। समाज में व्यक्ति का मूल्य, उसकी महत्ता, उसकी सामाजिक स्थिति से निर्धारित होती है। समाज में जिस व्यक्ति का सामाजिक स्टेटस ऊपर है, वह अधिक महत्वपूर्ण है। किसी व्यक्ति का रूतबा या उसकी विशेष सामाजिक और आर्थिक स्थिति इसके कारण है और इन कारणों का निर्धारक तत्व है– आय, व्यवसाय, शिक्षा और वंश परम्परा आदि। बहुधा इन्हीं के कारण व्यक्ति की विशेष सामाजिक और आर्थिक स्थिति बनती है और समाज में उसका कद निर्धारित होता है। इन्हीं सभी के कारण समाज में व्यक्ति या व्यक्ति समूह की विशिष्ट सामाजिक प्रवृत्तियों का निर्माण होता है। इसी सामाजिक और आर्थिक दावेदारी ने समाज का स्तरीकरण किया। इस स्तरीकरण का प्रतिफल वर्तमान का निम्न एवं मध्यवर्ग है। यद्यपि ऐतिहासिक काल के प्रारम्भ में हम समाज के क्रम को देखते हैं और उसमें तथाकथित निम्न एवं मध्यवर्ग की स्थिति को भी देखते हैं। लेकिन वर्तमान निम्न एवं मध्यवर्ग की संकल्पना आधुनिक विश्व की देन है और भारतवर्ष में इसका उदय औपनिवेशिक भारत में अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव से हुआ।

अंग्रेजी शिक्षा, औद्योगीकरण एवं पूंजीवादी सभ्यता के विकास के साथ भारत में निम्न एवं मध्यवर्ग की स्थिति और मजबूत होती है। इसके सामाजिक स्तर का विस्तार होने लगा। भारत की स्वतंत्रता के समय मध्यवर्ग का कुल आकार जनसंख्या के 10 प्रतिशत से भी कम था। जो निरन्तर बढ़ता गया। यद्यपि 1971 के दशक तक इस प्रतिशत में कोई बहुत वृद्धि तो दर्ज नहीं हुई पर उसकी प्रकृति में पर्याप्त अन्तर आ गया। जनसंख्या की दृष्टि से आकार बढ़ गया, मध्यवर्ग अब अधिकतर नगरवारी हो गया। उद्योगधन्धों में वृद्धि और सफेदपोश नौकरियों के विस्तार के कारण उसकी पहचान अलग दिखने लगी। उच्च शिक्षा पर तो लगभग उसका वर्चस्व ही हो गया। उच्च शिक्षा में वृद्धि और पश्चिमी जीवन पद्धति के परिणामस्वरूप उसके मन एवं मस्तिष्क में अभूतपूर्व बदलाव परिलक्षित हुए। मध्यवर्ग, सामाजिक और आर्थिक स्तर की

वह स्थिति है, जिसमें जटिलता, कृत्रिमता तथा एक विशेष प्रकार के दुच्चई के साथ सुविधाओं और महत्वाकांक्षाओं की होड़ दिखती है। अपने समय के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दबावों का अनुभव करते हुए मध्यवर्गीय व्यक्ति झूठे मान सम्मान की रक्षा के लिए परम्पराओं और रूढ़ियों का पोषण करता है, साथ ही समझौते के सहारे घिसट–घिसट कर सुविधाओं को हासिल करते हुए अरमानों को तरजीह देता है। जिसमें कई बार सफल होता है, तो कई बार असफल भी।

यद्यपि शोधकर्ता शुरूआत से ही हिन्दी साहित्य का विद्यार्थी रहा, जहाँ अमरकांत या उनके साहित्य की बात है, इसका परिचय हमें काफी देर से हुआ। जब मैं शोध के लिए पंजीकृत हुआ तो विषय चयन की बात आयी तो जेहन में आने वाले कई नामों में अमरकांत को चुना।

अमरकांत हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचन्द की परम्परा के संवाहक साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं। स्वतंत्रता के पश्चात् जिन हिन्दी साहित्यकारों ने प्रेमचन्द की यथार्थवादी परम्परा को नये आयाम प्रदान किए, अमरकांत उनके सर्वप्रमुख हस्ताक्षर हैं। यशपाल इन्हें हिन्दी का गोर्की कहा करते थे। राजेन्द्र यादव के अनुसार वे छोटे मनुष्यों के कथाकार हैं। अमरकांत के पात्र समाज के सबसे निम्नतर एवं निकृष्टतर लोग भी हैं। वे दुच्चे, दृष्ट और कमीने लोगों के मनोविज्ञान को अच्छी तरह समझते थे। अमरकान्त निम्न मध्यवर्गीय दयनीयता, असफलता, असहायता को उकेरने वाले कथाकार हैं। आर्थिक रूप से बेहाल, बेकार नवयुवकों की मानसिकता को दर्ज करना, उनका ध्येय रहा। अमरकान्त जिस मध्यवर्गीय दहलीज पर खड़े रहे, उसी को उन्होंने अपने साहित्य का अनिवार्य अंग बनाया। वे समाज की वास्तविकता पारिवारिकता को हिन्दी के अधिकांश कहानीकारों की अपेक्षा अधिक गहराई और सच्चाई से देखते हैं। अमरकान्त के साहित्य का महत्व इस दृष्टिकोण से है कि भारतवर्ष की अधिकांश जनता जिस निम्नवर्गीय एवं मध्यवर्गीय जीवन में जीती है, उसी जीवन को उन्होंने भोगा एवं रचा। इसलिए यह अधिक प्रमाणिक एवं सारभूत है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध को लेखबद्ध करने से पूर्व मुझे उपलब्ध अनेक शोध कार्यो का अवलोकन करने का अवसर मिला। उन्हीं शोध ग्रन्थों के अवलोकन से प्रबन्ध को

लिपिबद्ध करने की दृष्टि मिली। यह सत्य है कि हिन्दी साहित्य में अमरकान्त कोई अंजाना नाम नहीं है और सम्भव हो इनसे सम्बन्धित साहित्य पर अनेकों शोध कार्य हुए हों। अमरकान्त के साहित्य से सम्बन्धित जिन शोध कार्यो का मैंने अवलोकन किया, उनमें सिंहल की शोध कृति 'नई कहानी और अमरकान्त' (पुस्तकार रूप), डॉ0 योगेश गोकुल पाटिल का अमरकान्त का कथा साहित्य : कथ्य एवं शिल्प, बहादुर सिंह परमार का 'अमरकान्त का कथा साहित्य और सुभाष जाधव का 'कहानीकार अमरकान्त' लगभग ये सभी शोध ग्रन्थ पुस्तक के रूप में उपलब्ध है। इन सभी शोध ग्रन्थों में लगभग–लगभग अमरकान्त के साहित्य का विभिन्न पहलुओं के आधार पर मूल्यांकन किया गया है।

इन सभी शोध कार्य से हटकर मैंने 'अमरकान्त के कथा साहित्य में सामाजिक वर्गीय विषमताओं का अध्ययन' शीर्षक नाम से अपना विषय चुना। मैंने प्रस्तुत शोध ग्रन्थ में समाज में फैली सामाजिक वर्गीय विषमताओं तथा समाज के उदय की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डालते हुए अमरकान्त के कथा साहित्य में वर्णित निम्न एवं मध्यवर्गीय जीवन शैली का समाजशास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करने का प्रयास किया। भारतीय समाज में निम्न एवं मध्यवर्ग की पारिवारिकता, धार्मिकता, जातीयता, संकीर्णता, मानसिकता, आर्थिकता आदि पहलुओं पर विस्तृत अध्ययन करने की कोशिश की है। निम्न एवं मध्यवर्गीय परिवारों में नारी की अवस्थिति उसकी सामाजिक हैसियत की पड़ताल करने की कोशिश की है। शोध अनुसन्धान वैज्ञानिक ढंग से कुछ मौलिक और नये ज्ञान की खोज या किसी भी व्यवस्थित अध्ययन को कहते है। सामान्यतः अनुसन्धान की बुनियादी शर्त नये तथ्यों की खोज माना जाता है लेकिन कलाा और मानविकी के क्षेत्र में यह आवश्यक नहीं कि हर शोध में नये तथ्यों की खोज हो अपितु ज्ञात तथ्यों की नई पुनर्व्यवस्था अथवा पुनर्मूल्यांकन या नये सन्दर्भो में उनकी उपस्थिति भी शोध के दायरे में आते हैं या तो सकते हैं।

प्रस्तुत शोध विषय को इसके अन्तिम परिणति तक ले जाने में साहित्यिक शोध क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली समग्र शोध प्रविधि जैसे तथ्य संग्रहकारिणी, अध्ययनात्मक प्रणाली, परामर्श प्रणाली, इलैक्ट्रॉनिक एवं प्रिन्ट प्रणाली एवं इण्टरनेट आदि माध्यमों से

यथोचित आश्रय लिया गया। लेख के समग्र साहित्य, उससे सन्दर्भित ग्रन्थ एवं विचार विनिमय तथा विषय के जानकर प्रबुद्ध विद्वानों से विचार विनियम आदि के माध्यम से शोधकार्य को अधिक परिनिष्ठित, वस्तुनिष्ठ, वैज्ञानिक, मौलिक एवं उपयोगी स्वरूप प्रदान करने की भरसक कोशिश की गई है। इण्टरनेट पर उपलब्ध सामग्री के अतिरिक्त भी शोध ग्रन्थों का अध्ययन शोध कार्य को पूर्णता प्रदान करने में सहायक रहा। इण्टरनेट पर किसी भी साहित्यकार से सम्बन्धित सामग्री की उपलब्धता जरूर है, परन्तु पर्याप्त नहीं है। इसलिए शोध की सम्भावना बनी हुई है। इसके लिए साहित्य के समग्र अनुशीलन की जरूरत है।

विषय विस्तार की दृष्टि से शोध प्रबन्ध को छः अध्यायों में निबद्ध किया गया है। इन छः अध्यायों को भी अध्ययन की सरलता एवं स्पष्टता के लिए कई उपबिन्दुओं में विभक्त किया गया है। इस तरह विषय के समग्र पहलुओं के अध्ययन की हर सम्भव कोशिश की गई है।

शोध प्रबन्ध का प्रथम अध्याय 'अमरकान्त : जीवन, व्यक्तित्व एवं कृतित्व' है। इस अध्याय में साहित्यकार के जन्म, शिक्षा, पारिवारिक पृष्ठभूमि तथा उनके समग्र साहित्य का यथातथ्य विवरण प्रस्तुत किया गया। साहित्यकार द्वारा सम्पादित पत्र–पत्रिकाओं की सूची तथा साहित्यकार द्वारा प्राप्त विभिन्न राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय पुरस्कारों का विवरण दिया गया है।

शोध प्रबन्ध का द्वितीय अध्याय है– 'हिन्दी कथा साहित्य में अमरकान्त का स्थान'। इस अध्याय को दो भागों में विभाजित कियाा गया है। प्रथम भाग (क) में हिन्दी साहित्य के महान लेखक श्री प्रेमचन्द की कहानियों के आधार पर अमरकान्त जी की कहानी साहित्य के स्थान को वर्णित किया है।

इसी तरह भाग (ख) में प्रेमचन्द के उपन्यासों के आधार पर अमरकान्त जी की कहानी साहित्य के स्थान को वर्णित किया है। साथ ही साथ भारतीय समाज में इसके लिए उत्तरदायी परिस्थितियों एवं भारतीय मध्यवर्गीय समाज के स्तरीकरण पर प्रकाश डाला गया है।

शोध प्रबन्ध का तृतीय अध्याय है– 'अमरकान्त के उपन्यासों में सामाजिक वर्गीय

जीवन : प्रमुख समस्यायें'।

अध्याय द्वितीय की तरह इस अध्याय को दो भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम भाग में अमरकान्त के उपन्यास साहित्य में वर्णित सामाजिक जीवन में जीवनयापन कर रहे कस्बाई जीवने के परिवारों की प्रमुख समस्याओं को वर्णित किया गया है। साथ ही निम्न एवं मध्यवर्ग के ग्रामीण एवं कस्बाई जीवन शैली, जातीय परिदृश्य, धार्मिकता, मध्यवर्ग में व्याप्त सामाजिक शोषण एवं इस वर्ग की धार्मिक मोहममता की गहन पड़ताल की गई है।

अध्याय के दूसरे भाग में अमरकान्त के उपन्यासों में भारतीय समाज में फैल रही सामाजिक समस्याओं का स्वरूप और उनके वैकल्पिक समाधान के संदर्भ में वर्णित किया गया है तथा सामाजिक सन्दर्भ की विवेचना एवं अमरकान्त के साहित्य की विधिवत् समीक्षा की गई।

शोध प्रबन्ध का चतुर्थ अध्याय है– ''अमरकान्त की कहानियों में सामाजिक वर्गीय जीवन'' प्रस्तुत अध्याय को भी दो भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम भाग में अमनकान्त जी ने अपनी कहानी में दलित और शोषित वर्ग के चित्रण की विचार दृष्टि को विस्तार से प्रस्तुत किया है। साथ ही स्त्री–पुरूष सम्बन्ध की मानवीय आधार पर समीक्षा की गई है।

द्वितीय भाग में अमरकान्त जी ने अपनी कहानी के द्वारा समाज के विभिन्न सम्बन्धों में प्रस्तुत दृष्टिकोण तथा जिजीविषा के साथ–साथ मध्यवर्गीय परिवार में नारी की सामाजिक उत्तरदायित्वों के निर्वाह में नैतिक, धार्मिक मूल्यों के आवरण में होने वाले शोषण का भी वर्णन

शोध प्रबन्ध के पंचम्–अध्याय 'कथाशिल्प' को भी उपरोक्त अध्यायों के तरह ही दो भागों में विभाजित किया गया है। प्रथम भाग में अमरकान्त के शोध साहित्य में वर्णित सामाजिक जीवन के यथार्थ को व्यक्त करने में कथा भाषा की जीवंतता का विश्लेषण किया गया है। इसके अन्तर्गत कथावस्तु का चयन एवं प्रस्तुतीकरण, पात्र एवं चरित्र विधान, कथोपकथन की सृश्टि,भाशा षैली का स्वरूप, नाटकीयता, आलंकारिकता, प्रतीकात्मकता, बिम्बात्मकता व्यंग्यात्मकता, देषकाल और वातावरण उद्देष्य तत्व आदि

बिन्दुओं का विवेचन किया गया है।

जबकि दूसरे भाग में पूर्व साहित्यकारों के कथा साहित्य से अमरकान्त के कथा साहित्य में शिल्पगत भिन्नता को दर्शाने का प्रयास किया गया है।

शोध प्रबन्ध का अन्तिम अध्याय 'उपसंहार' में शोध प्रबन्ध के समस्त अध्यायों की सूक्ष्म समीक्षा करते हुए अमरकान्त के साहित्य की महत्ता, प्रासांगिकता एवं निम्न एवं मध्यवर्गीय जीवन की त्रासद स्थितियों के साथ उनके निहित आशा एवं आकांक्षा के वितान में व्यतीत होने वाली जीवन शैली की पूर्णता का अंकन है। इस तरह शोध विषय का समग्र क्रमवार सूक्ष्म समीक्षा करते हुए शोध को वैज्ञानिक बनाने की पूरी कोशिश की गई है।